रेवती रमण होने का अर्थ

सम्पादन

सतीश कुमार राय
अशोक गुप्त

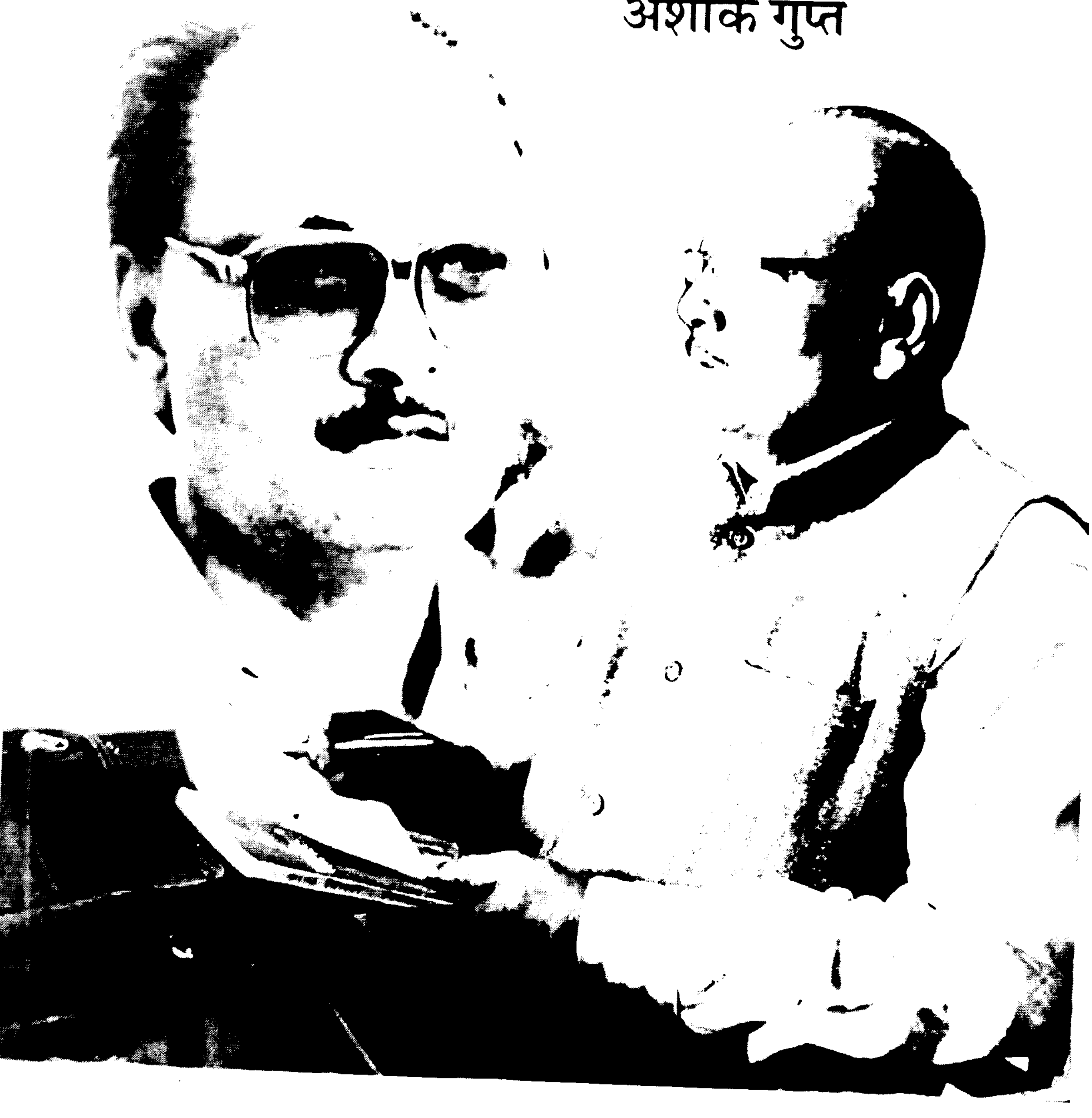

रेवती रमण होने का अर्थ

सम्पादक

सतीश कुमार राय

अशोक गुप्त

अभिधा प्रकाशन

प्रथम संस्करण
2020
सर्वाधिकार
सम्पादक

प्रकाशक
अभिधा प्रकाशन
रामदयालु नगर, मुजफ्फरपुर-842002

अक्षर-संयोजन
एस. कुमार

मुद्रक
बी० के० ऑफसेट, दिल्ली - 32

मूल्य
225/- (दो सौ पच्चीस रुपये)

Rewati Raman Honey Ka Arth

Edited By **Dr. S.K. Rai & A. Gupta** **Rs. 225.00**

अनुक्रम

सम्पादकीय		: सतीश कुमार राय	7
प्रस्तुति		: अशोक गुप्त	21
1.	साथ चलते हुए	: विश्वनाथ प्रसाद तिवारी	23
2.	हिन्दी साहित्य के चर्चित आलोचक...	: रिपुसूदन श्रीवास्तव	26
3.	आलोचना का कालयात्री	: मदन कश्यप	32
4.	रेवती रमण की आलोचकीय सक्रियता	: रामप्रवेश सिंह	36
5.	डॉ. रेवती रमण की आलोचना-दृष्टि	: विजयशंकर मिश्र	42
6.	साक्षात्कार	: राकेश रंजन	46
7.	साक्षात्कार	: कल्याण कुमार झा	57
8.	समय की रंगत	: अंजना वर्मा	66
9.	एक आलोचक का कवि	: पूनम सिंह	71
10.	अजनबियों के संग चल रहा थका अकेला	: राकेश रंजन	77
11.	कविता और मानवीय संवेदना	: जगदीश विकल	84
12.	युवा समीक्षक का प्रबुद्ध समीक्षात्मक विवेक?	: वेदप्रकाश अमिताभ	90
13.	समकालीन कविता का परिप्रेक्ष्य	: कृष्णचन्द्र लाल	94
14.	समकालीन कविता का परिप्रेक्ष्य...	: रवीन्द्र उपाध्याय	99
15.	रचना की तरह आलोचना	: रमेश ऋतंभर	103
16.	रेवतीरमण का 'समकाल'	: प्रेमशंकर रघुवंशी	105
17.	'कविता में समकाल' एक समीक्षा कृति	: श्रीराम परिहार	108
18.	संघर्ष तपी काव्य-साधना का संधान	: शेखर शंकर मिश्र	115
19.	जातीय संवेदना के सजग साहित्य चिन्तक	: संध्या पाण्डेय	121
20.	जातीय मनोभूमि की तलाश	: अनन्तकीर्ति तिवारी	125
21.	सहज-सरल, स्वाभिमान की आवाज	: सुशांत कुमार	130
22.	'आवाज के परिन्दे' और उनके सलीम अली	: अनामिका	134
23.	समकालीन कविता की पुख्ता पहचान	: रामेश्वर द्विवेदी	141
24.	कवियों की गली से गुजरता कवि आलोचक	: उज्ज्वल आलोक	147
25.	पुस्तकों के फ्लैप से		153
चिट्ठी-पत्री			155
चित्रावली			191

❒

कवियों की गली से गुजरता कवि आलोचक

—उज्ज्वल आलोक

वर्तमान समय में जहाँ पाठ पढ़े बिना भी आलोचना करने की प्रथा विकसित हो रही है, वहाँ एक सजग पाठक पाठाध्ययन के पश्चात् अपनी प्रतिक्रिया दे, यह बड़ी बात है। हिंदी के समर्थ आलोचक रेवती रमण की पुस्तक 'उजाड़ में आवाज के परिंदे' विशिष्ट दृष्टि के साथ एक उत्कृष्ट पाठकीय प्रतिक्रिया है। एक आलोचक सबसे पहले एक पाठक होता है, वह जितना अच्छा पाठक होगा, उसकी आलोचना-दृष्टि उतनी ही पैनी और तीक्ष्ण होगी। आलोचक रेवती रमण एक अच्छे पाठक हैं, इसका प्रमाण उनकी लगभग पुस्तकें देती हैं। पढ़ने और समझने की भूख के कारण ही रेवती रमण सर्जक की गलियों से गुजरते हैं, भटकते हैं, उनकी 'जातीय मनोभूमि की तलाश' करते हैं। बीसवीं शताब्दी के 'सर्जक की अंतर्दृष्टि' की पहचान करते हैं। उजाड़ में आवाज के परिंदे कौन हैं? और ये परिंदे क्या चाहते हैं? इसे भी जानने-समझने की कोशिश करते हैं। वे कवियों से मिलते हैं, व्यक्तिगत संबंध बनाते हैं, किंतु पाठालोचना के दौरान उनकी रचनाओं को उनसे पृथक् कर देते हैं। वे पाठ को पाठ की तरह देखना चाहते हैं, न कि किसी महान कवि या मित्र कवि के प्रसाद के रूप में। यही कारण है कि किसी कवि-विशेष का प्रशस्ति-गान या स्तुति-गान नहीं करते, बल्कि एक विशिष्ट दृष्टि के साथ पाठ को उसकी परिस्थिति में देखने का प्रयास करते हैं।

आलोचना-कर्म करते समय रेवती रमण पर उनका पेशा भी हावी रहता है। ऐसा भान होता है कि वे अपने शिष्यों को पाठ समझाना चाहते हैं, उसमें प्रवेश करने का तरीका सिखाते हैं। कह सकते हैं कि शुक्ल जी की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए वे अपने विद्यार्थियों के लिए नोट्स तैयार कर रहे हैं। इन नोट्स में कवि क्या कहना चाहता है, उसकी बातें कितनी संप्रेषित होती हैं तथा उसकी रचना की प्रमुख प्रवृत्ति क्या है? इस ओर भी ध्यान आकृष्ट कराते चलते हैं। उन्होंने आरंभ में ही स्पष्ट कर दिया है कि इसमें संकलित लेखों के आधार पर समकालीन कविता की प्रवृत्तियों को पहचानना मुश्किल नहीं होगा। (पृ. 05)

'उजाड़ में आवाज के परिंदे' अभिधा प्रकाशन, मुजफ्फरपुर से प्रकाशित एक समीक्षा संग्रह है, जिसमें नामवर सिंह की प्रतिभा पहचान से लेकर हिमानन्द की समकालीन कविता तक कुल 30 लेख संकलित हैं। ये लेख अलग-अलग समय में अलग-अलग संग्रहों की समीक्षाएँ हैं, किंतु इस पुस्तक में आकर पूरे समकालीन काव्य का परिदृश्य तैयार करते हैं।

नामवर सिंह ने बहुत-सी कविताएँ लिखी हैं, परंतु उन्हें जैसी ख्याति, जैसी प्रतिष्ठा, जैसी पहचान आलोचना-कर्म के लिए मिली, वैसी काव्यकर्म के लिए नहीं। ऐसे में प्रश्न उठता है कि क्या नामवर जी की कविता में वह क्षमता नहीं थी, जो उन्हें एक कवि के रूप में पहचान दिला सके। रेवती रमण की स्पष्ट मान्यता है कि 'नामवर जी कवि हैं, इसलिए कविता के श्रेष्ठ आलोचक हैं, वे कहानीकार हैं इसलिए श्रेष्ठ कथा आलोचक हैं।'(पृ.17) पुनः प्रश्न खड़ा होता है कि क्या नामवर सिंह का श्रेष्ठ आलोचक व्यक्तित्व उनके कवि व्यक्तित्व का हरण कर लेता है या उसे दबा देता है? ऐसे में नामवर सिंह की कविता अपने पुनर्मूल्यांकन की माँग करती है। रेवती रमण ने नामवर जी की कविता का पुनर्मूल्यांकन करते हुए स्पष्ट किया है कि 'उनकी कविता में एक बिम्ब मालिका है, जहाँ नए-नए उपमानों के प्रयोग हुए हैं।' उन्होंने यह भी स्पष्ट किया है कि 'नामवर जी कवि के रूप में अपने प्रकृति सौंदर्य के संश्लिष्ट वर्णनों के लिए जाने जाएँगे।'(पृ.16) उन्होंने नामवर जी की कविता के वैशिष्ट्य की तलाश की है, किंतु धीरे से यह कह कर आगे बढ़ गए कि 'नामवर सिंह निराला नहीं हैं।'(पृ. 16)

आलोचक रेवती रमण को पढ़ते हुए ऐसा भान होता है कि कविता के दो मुख्य मानदंड हैं—निराला और त्रिलोचन। जहाँ इन कवियों का या इनके काव्य वैशिष्ट्य का जिक्र होता है, वे वहाँ ठहर जाते हैं। यही कारण है कि कवि केदारनाथ सिंह को पढ़ते हुए निराला की आवाज सुनना चाहते हैं और त्रिलोचन को पढ़ना अधिक पसंद करते हैं। इन कवियों के माध्यम से उन्होंने यह भी देखने की कोशिश की है कि समकालीन कवियों की जातीय चेतना कैसी है और कितनी विकसित हुई है? कवि केदारनाथ सिंह की जातीय चेतना के सन्दर्भ में उन्होंने लिखा है कि 'निराला की आवाज केदार ने सुनी है यह केवल एक घटना नहीं। सुनना कवि जीवन और मूल्यों की स्वीकृति का भी संदर्भ है।'(पृ.28) केदारनाथ सिंह अपने मूल्यों से समझौता नहीं करना चाहते। वे पुरबिया कवि बनकर रहना पसंद करते थे। 'सृष्टि पर पहरा' इस पुरबिया कवि की वापसी है, जो दिल्ली में एडजस्ट न कर पाने के कारण दुखी है। और इस 'दुखते हुए

जीवन को ज्ञात है कविता के जातीय स्रोत और उपकरणों का रहस्य।'(पृ.25)

बकौल डॉ. कमला प्रसाद कवि विजेंद्र की पहचान हिंदी के व्यापक और गहरी जातीय परंपरा के कवि के रूप में है। रेवती जी ने उनके काव्य-संग्रह 'जनशक्ति की आलोचना' करते समय स्पष्ट किया है कि 'वे एक बड़ी क्षमता वाले कवि हैं, निराला और त्रिलोचन के सिसृक्षा के अनन्य संगी सहचर हैं।'(पृ. 31) आगे उन्होंने लिखा है कि 'निराला जानते थे कि क्या, कैसे और क्यों लिख रहे हैं। विजेंद्र को भी ज्ञात है बल्कि सबसे अधिक उन्हें ही ज्ञात है कि वे जैसा लिख रहे हैं वैसा क्यों लिख रहे हैं।'(पृ.32) बस अंतर्द्वंद्व है कि कहाँ से शुरू करें, क्योंकि सामने कई समस्याएँ हैं, जिन पर विचार होना आवश्यक है। हालाँकि कवि विजेंद्र ने विचार किया है उनके जीवन पर, जिन्होंने फावड़े से खोदकर पानी पिया। विचार किया है दलितों, स्त्रियों, आदिवासियों की समस्याओं पर। 'लकड़हारा' नामक काव्य-संग्रह इन्हीं समस्याओं पर चिंता का संग्रह है, जहाँ कवि आंदोलित किसानों की सामूहिक आवाजें, कारखानों के प्रदर्शनकारी श्रमिकों की आवाजें, सुनता है और यह विश्वास रखता है कि 'यह वियतकांग दल के दल अटूट/ जो लड़ते हैं लुटेरों के विरुद्ध/ अपनी प्यारी जन्मभूमि के लिए।' आलोचक का विश्वास है कि 'यह बिल्कुल आज और अभी की कविता है। यह भविष्य की भी कविता है।'(पृ.35) कवि की प्रतिबद्धता देखते हुए आलोचक रेवती रमण ने विजेंद्र जी को नागार्जुन और त्रिलोचन के समक्ष खड़ा किया है। रेवती जी ने लिखा है कि 'उनकी कविता ने कसौटियों को बौना बना दिया है, आलोचना के पूर्वाग्रह को खारिज कर दिया है और प्रतिमानों की पुरोहिती को आईना दिखाया है।'(पृ.32) परंतु इस प्रश्न का जवाब नहीं दिया है कि आखिर किन कारणों से उन्हें हिंदी जगत् में वह प्रतिष्ठा नहीं मिली, जो अन्य कवियों को मिली है। हाँ, यह कहा जा सकता है कि आलोचक को कविता में जो अच्छा लगा उसे बताया है, जो बातें संप्रेषित हुईं उन्हें रेखांकित किया है।

कवि विश्वनाथ प्रसाद तिवारी की रचना 'आखर अनंत' की समीक्षा करते हुए रेवती जी ने लिखा है कि 'विश्वनाथ जी परंपरा और आधुनिकता के अन्योन्याश्रित संबंध में आस्था रखते हैं किंतु जातीय अहं की पुष्टि में भी वे कभी पीछे नहीं रहते हैं।'(पृ.60) इस अहं की पुष्टि करते हुए कई बार वे निराला से आगे बढ़ जाते हैं। भवसागर कविता को आधार बनाकर रेवती जी ने लिखा है कि 'यह समकालीन कविता का एक ऐसा अध्याय है जो भौतिक चीजों को झूठा नहीं मानता। यह नव अध्यात्म है। निराला के नव वेदांत के आगे की चीज है यह।'(पृ.65) कवि का यह नव अध्यात्म उसे यथार्थवादी कविता

लिखने के लिए प्रेरित करता है। और वह 'आत्मा की वह धुन' सुन स्वाधीनता के लिए शहीद हुए सिखों की कथा सुनाता है।

दर्शन और लोक से सीधा जुड़ाव कविता को व्यापक फलक प्रदान करता है, जिसे देखकर आलोचक इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि विश्वनाथ जी चिन्तक हैं। उनका एक विचारक व्यक्तित्व है। पुरा कथाओं से लेकर नवीनतम दार्शनिक मतों, राजनीतिक विचारधाराओं के विरोध-समर्थन का कविताओं में हर बार एक समन्वित शिल्प होता है, लेकिन जो सबसे अधिक रेखांकित करने योग्य है, वह है पुनः पुनः लोक संस्कृति में अधिवास।(पृ.67)

समकालीन कवियों में चंद्रकांत देवताले का नाम भी अग्रणी है। 'इतनी पत्थर रोशनी' और 'उजाड़ में संग्रहालय' को आधार बनाकर आलोचक रेवती रमण ने लिखा है कि चंद्रकांत देवताले की कविता को पढ़ते हुए अक्सर ऐसा लगेगा कि समय के साथ खुद को बदलने की आंतरिक विकलता और संस्कृति के मोर्चे पर डटे रहने की कोशिश ने उनकी कविता को समकालीन परिदृश्य के भीतर जगह दी है।(पृ.71) जहाँ हमारे संवेदनशील कवियों के साथ एक हादसा यह हुआ है कि वे साफ-साफ बोल नहीं पा रहे हैं, आलोचक रेवती रमण का मानना है कि वे (देवताले) खामोश लोगों की जुबान बनना चाहते हैं, दहाड़ते आतंक के विरुद्ध यह खास बात है।(पृ.73-74)

'मैं उजाड़ में एक संग्रहालय हूँ/ हिरण की खाल और एक शाही वाघ को/ चमका रही है उतरती हुई धूप/ पुरानी तस्वीरें मुझ पर तोप की तरह तनी हैं/ भूख की छायाओं और चीखों के टुकड़ों को दबोचकर/ नरभक्षी शेर की तरह सजा धजा बैठा है जीवित इतिहास।' 'उजाड़ में संग्रहालय' की कविताओं के हवाले से आलोचक ने स्पष्ट किया है कि ये कविताएँ राजनीति के दौर में लिखी जान पड़ती हैं। सर्वग्राही सत्ता की संस्कृति का नारा है—सबसे पहले इतिहास को ठीक करो। उन्होंने आगे और स्पष्ट किया है कि देवताले समर्पित कवि हैं, समकालीन बोध के साथ। इतिहास से शत्रुता का उनका शानदार इतिहास रहा है।(पृ.83) इतिहास से शत्रुता का कारण स्पष्ट करते हुए उन्होंने लिखा है कि 'देवताले उस माहौल के रूबरू हैं, जिसमें भय है, हिंसा है, फासिस्ट शक्तियों का नंगा नृत्य है, पुनरुत्थान का उन्माद है।'(पृ.79)

इस माहौल को देखते हुए आलोचक ने अशोक वाजपेयी के काव्य-संग्रह 'नक्षत्रहीन समय में' काव्य-संग्रह के आरंभ के वक्तव्य को रेखांकित किया है कि 'हमारा समय कविता के लिए अनुकूल नहीं है, लेकिन यह भी सही है कि प्रायः कोई भी समय कविता के लिए अनुकूल नहीं होता। कविता इस अनुकूलता के

अभाव में ही अक्सर संभव होती है। वह समय की सारी प्रतिकूलता से जूझकर और उसे अतिक्रमित करने का दुस्साहस करती है।' कविता का यह दुस्साहस अंधेरे में रोशनी के भरोसे पर टिका है, जिसके लिए हमने कोशिश नहीं की।

'हमें बढ़ते अँधेरे की पहचान थी
और भरोसा भी कि अंततः रोशनी आ सकती है
लेकिन उसके लिए हमने कोशिश नहीं की।' ('नक्षत्रहीन समय में')

ऐसा नहीं है कि समकालीन कवियों ने कोशिश नहीं की। कोशिश की भी और जोरदार तरीके से की। आलोक धन्वा की कविता 'गोली दागो पोस्टर' या मदन कश्यप की कविता 'कूपलेन में अँधेरा' इस कोशिश का चरम है। हालाँकि कुछ लोग आलोक धन्वा को कवि नहीं मानते, क्योंकि कम लिखते हैं। रिल्के ने भी कहा है कि 'बिना लिखे मरने ना लगो, तब तक ना लिखो।' आलोक जी कम लिखते हैं, लेकिन तीक्ष्ण लिखते हैं। यही कारण है कि मैनेजर पाण्डेय ने उनकी कविता 'जनता का आदमी' को मुक्तिबोध की 'अँधेरे में' के बाद सबसे महत्त्वपूर्ण कविता कहा है। आलोचक रेवती जी महसूस करते हैं कि ''जनता का आदमी' एक समर्थ कविता अवश्य है, पटकथा या अँधेरे में से भले बेहतर ना हो।'(पृ.137)

आलोक धन्वा सामाजिक असमानता के विरोध में कविता रचते हैं और जो यथास्थितिवादी हैं उन्हें कटघरे में खड़ा करते हैं। स्त्री-प्रश्न पर यह क्रिया और तीव्र रहती है। आलोचक ने लिखा है कि पुरुषवादी रवैया किस तरह कुलीनता की हिंसा का पर्याय बन जाता है, आलोक उसका अन्तरंग विश्लेषण करते हैं। एक बड़े कवि की तरह यथास्थितिवादियों को वे हर बार अपनी कविताओं के कटघरे में खड़ा करते हैं।

आलोक धन्वा की तरह राजेश जोशी की भी कई कविताओं में स्त्रियाँ केंद्र में हैं। कहीं अपनी समस्याओं के साथ तो कहीं अपने सहज स्वभाव के साथ। 'किस्सा काली धोबन का', 'जादूगरनी', 'रैली में स्त्रियाँ' और 'जातिर के बच्चों की कहानी' आदि कविताओं में स्त्री-चिंता सहज ही देखने को मिलती है। आलोचक की दृष्टि में ऐसा इसलिए संभव हो पाया है, क्योंकि 'राजेश जोशी के भीतर एक स्त्री रहती है'।(पृ.155)

राजेश जोशी समाज के सभी पक्षों पर बेहद स्थिर होकर गहनता से विचार करते हैं। मनुष्य और समाज के शत्रुओं की पहचान करते हैं। 'चाँद की वर्तनी' और 'दो पंक्तियों के बीच' काव्य-संग्रहों की समीक्षा करते हुए आलोचक इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि 'राजेश जोशी से हिंदी कविता को बड़ी उम्मीद

है'। (पृ.165)

अन्य समकालीन कवियों की तरह ज्ञानेंद्रपति की कविता हाशिए पर खड़े लोगों के साथ खड़ी दिखती है। ज्ञानेंद्रपति का सातवाँ काव्य-संग्रह 'मनु को बनाती मनई' के केन्द्र में भी स्त्रियाँ हैं। यहाँ साधारण स्त्रियाँ भी उनकी संवेदना में ऊँची जगह पाती हैं। आलोचक ने इस संग्रह के संदर्भ में स्पष्ट किया है कि ''मनु को बनाती मनई' की कविताएँ स्त्री-विमर्श की रचना-प्रवृत्ति के भीतर ही पठनीय और विचारणीय प्रतीत होती हैं किन्तु इनमें पुरुष शोषक या खलनायक नहीं है, क्योंकि इन कविताओं में हाशिए पर खड़ा है।' वर्तमान समय में ऐसे वक्तव्य एक नए विमर्श को खड़ा करते हैं। हालाँकि यह भी सत्य है कि आज का कवि असली शत्रु की पहचान करता है। 'नए युग में शत्रु' इसी शत्रु की पहचान है। मंगलेश डबराल का यह नया काव्य-संग्रह 'नए युग में शत्रु' ताकत की दुनिया को उजागर करता है। ताकत की दुनिया की पहचान मदन कश्यप की कविताओं में भी होती है। कश्यप जी की कविता 'प्रतीक्षा' अमेरिकी साम्राज्यवाद की ताकत के सामने सोवियत संघ के विघटन को एक त्रासदी के रूप में देखती है, जिससे साम्यवादी कवि अभी तक उबर नहीं पाया है।

रेवती रमण ने इस पुस्तक में कवियों की रचनाओं के तमाम उदाहरण देते हुए स्पष्ट करने की कोशिश की है कि रचनाकार की दृष्टि समकालीन समस्याओं पर कैसी है? और वह दृष्टि पूर्ववर्ती रचनाकारों की दृष्टि से कितनी विकसित है? वे चन्द्रकांत देवताले, विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, आलोक धन्वा, राजेश जोशी, अरुण कमल, ज्ञानेंद्रपति, मदन कश्यप और मंगलेश डबराल आदि प्रतिष्ठित कवियों को ही नहीं पढ़ते, बल्कि इंदु जैन, अमृता भारती, विजय कुमार, महेंद्र नेह तथा हिमाचल आदि के उन कवियों की रचनाओं को भी देखने-समझने की कोशिश करते हैं, जो अल्प चर्चित हैं।

इस संग्रह में आलोचक रेवती रमण का उद्देश्य किसी कवि को छोटा या बड़ा बताना नहीं है, ना ही किसी की कमियों को रेखांकित करना है, बल्कि पुस्तक में शामिल कवियों की कविताओं में क्या विशेष है, उनकी कविताएँ अपनी बात किस तरह संप्रेषित करती हैं और संप्रेषण में कितना सफल हो पाती हैं, यह बताना है। जाहिर है, अपने उद्देश्य में आलोचक सफल हुआ है।

❑